रंग लाई शुभकामनायें

ब्र.कु. श्वेता, शान्तिवन

शुभकामनाओं की जरूरत सिर्फ मनुष्यात्माओं को ही नहीं बल्कि प्रकृति के तत्वों को भी है। ये प्रकृति के तत्व हमें सुख देते हैं। शुभकामनायें देकर हम उनकी सेवा कर सकते हैं। हम जो सोचते हैं, वे तरंगे वातावरण में फैलती हैं और प्रकृति को प्रभावित करती हैं। हमारे विचारों से ही वायुमण्डल बनता है। दुआयें या शुभकामनायें किस प्रकार प्रकृति और पुरुष दोनों पर जादुई प्रभाव डालती हैं, आइये देखते हैं रंग लाई शुभकामनायें

पात्र परिचय:
पाँच तत्व, दो शुभकामना के फरिश्ते, एक निराश युवक

धरती:
मैं धरा सतयुग में थी
धन-धान्य संपन्न, पुण्य सलीला
आज इस कलिकाल में हाय!
यह कैसी मानव की लीला

देखती रही मैं बेबस
अपने पुत्रों को मेरे टुकड़े कराते
एक-एक इंच के लिए ये नादान
खून की नदियाँ बहाते

कोई तो सुने मेरी पुकार
मेरी व्यथा है अपार
रिसते घाव सिसकती सांस
अब नहीं दिखती कोई आस

आकाश
मैं आकाश
था कितना बेहद विशाल
बांट-बांट कर मुझे हदों में

क्या बना दिया मेरा हाल

उड़ते थे पंछी मेरी गोद में
आज देखने को तरसता हूँ
लोहे के पंछी की गड़गड़ाहट से
अब मैं डरता हूँ

आह काश! मेरी आहें कोई समझ पाये
है कोई जो मुझे मेरा खोया वैभव लौटाये

(गीत: पूछती है ये धरा, पूछता आकाश है..ये विकास हो रहा या हो रहा विनाश है..)

जल:
जल मैं जल
मुझमें था वो बल
घी-दूध सा था निर्मल
बहता था सर्वत्र कल-कल
पलते थे पेड़-पौधे फूल-फल

पर हाय मानव!
आज मेरी दुर्दशा तेरे कारण
बढ़ती फैक्ट्री, बढ़ता प्रदूषण
क्या-क्या मुझमें मिला डाला
मेरे उजले रंग-रूप को
कर दिया कैसा तो काला

वायु:
मैं सबको सांसे देने वाली
घुट रहा मेरा ही दम
छोड़ रहा मानव मुख से धुआँ
चारों ओर है दुर्गंध

ये कल-कारखानों का ज़हर

वायुमण्डल में फैल रहा
ये वाहनों का शोर
मेरा सुख-चैन छीन रहा

ये कैसी भौतिक उन्नति
सुख की एक श्वास नहीं
फिर से बनूँ मैं शुद्ध, निर्मल
अब कोई आश नहीं
(चलती है लहराकर पवन कि सांस सभी कि चलती रहे..कि प्रीत दिलों में पलती रहे)

अग्नि:
लगी है आग घर-घर में
नफरत, ईर्ष्या, वैर की
किसी के सुख को देख
ये जला रहे अपना जी

मुझसे जीवन चलता
पर ये तो जीवन छीन रहे
काम, क्रोध की अग्नि में क्यों मानव झुलस रहे

मेरी तपन से बढ़कर
मन इनका तप रहा
इसलिए तो पर्यावरण में
असंतुलन बढ़ रहा

देख-देख इनके रंग-ढंग
जी मेरा जलता है
अब तो सब कुछ जला देने को
मन मेरा करता है।

पाँचों तत्व (क्रोध में):
अगर हम अपनी पर आ जायेंगे
तो जीवन के नामोनिशां मिट जायेगे

मत दे मानव हमको चुनौती
हममें है शक्ति अपार
ला देंगे हम तबाही
मचा देंगे हाहाकार

(गीतः सद्भावना अपनाकर जग में सबको सुखी बनाना है..)

फरिश्तेः
हम हैं शुभकामना के फरिश्ते
जोड़ कर शिव से सब रिश्ते
फैला रहे शान्ति की किरण
मिटा रहे हर मन की तपन

हमारे दिल की ये दुआयें
चारों तरफ फैल जायें
धरती, आकाश, जल, वायु, अग्नि
पाँचों तत्व खुशहाल हो जायें
मिले इन्हें नया जीवन
नाचें गाये, खुश होकर मगन
हर घर में, हर मन में
सुख-शान्ति, खुशहाली आये

(गीतः जिनके हैं संकल्प सुहावन, वाणी बरसाती सुख सावन,
कर्म जिन्हों के पावन-पावन, जीवन जिनका है मनभावन,
वो फ़रिश्ते पे प्रभु की नज़र है, गुण गाती धरती-अंबर हैं (दिल से देते चलो दुआये)

पाँच तत्वः
आहा हमें कितना अच्छा लग रहा है
शान्ति मिल रही है शक्ति मिल रही है
कहीं से शीतल-शीतल किरणें आ रही हैं
हम बहुत खुश हैं, संतुष्ट हैं, प्रसन्न हैं।

फरिश्तेः

ये दुआयें..ये दुआयें
देते रहो दुआयें
लेते रहो दुआये
कोई इतना धनवान नहीं
जो इनके बिना काम चलाये
कोई इतना गरीब भी नहीं
जो इनका दान न कर पाये

(गीत: सब अपने हैं अपनो को हम देंगे सदा शुभभावना,
आओ करें हम सभी के लिए पल-पल मंगल कामना..
शिव पिता का शुभ संदेशा जन-जन को पहुंचाना
सद्भावना अपनाकर दिल में सबको सुखी बनाना है..)

निराश युवक:
कोई नहीं है अपना
लगता है सब सपना
अब ये जीवन तो है बेकार
इसमें नहीं है कोई सार
सफलता चली गई मुझसे कोसो दूर
पहले नहीं था मैं इतना बेबस, इतना मजबूर
क्या करूँ, कहाँ जाऊँ,
किसको अपना दुखड़ा सुनाऊँ
नहीं रहा जीने का कोई अर्थ
नहीं सहा जाता अब ये दर्द

शुभकामना का फरिश्ता
क्यों तुम उदास हो
निराश हो
ये जीवन तो है प्रभु उपहार
इसको दो पूरा सत्कार
सब कुछ तुम कर सकते हो
अपना भाग्य बदल सकते हो
तुम अगर चाहोगे

संसार बदल जायेगा
सुख-शान्ति का एक सवेरा आयेगा
(गीत: नाजुक सा फूल है तू किसी और के चमन का.. नाजुक सा फूल है तू किसी और के चमन का खुशबू से तेरी महके क्यों बाग मेरे मन का..मेरी जिन्दगी में छाई तुझसे बहार क्यों है..ओ नन्हे से फरिश्ते..तुझसे ये कैसा नाता..कैसे ये दिल के रिश्ते..ओ नन्हे से फरिश्ते)

निराश युवक: (नये उत्साह से)
ओ नन्हे फरिश्ते, शुक्रिया तेरा लाखों बार
सदा याद रहेगा तेरा निर्मल, नि:स्वार्थ प्यार
अब आया मुझमें आत्मविश्वास
मैं चाहूँ जो कर सकता हूँ
अपने जीवन को बदल सकता हूँ
मैं भी करूँगा आज से शुभकामना का दान
बनाऊँगा इस धरा को स्वर्ग समान
(गीत: हे स्वर्ग बसेगा धरती के आंगन, सबका जीवन होगा पावन..
झूमेगा हर तन-मन कि रामराज्य आने वाला है..)